मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2021 marumegh
ISSN:2456-2904

खरीफ फसलों की प्रमुख बीमारियाँ व रोकथाम

अंजू बिजारणियाँ[1], रोशन कुमावत[1] व रमेश चौधरी[2]
[1]शस्य विज्ञान विभाग, कृषि विश्वविद्यालय, कोटा।
[2]मृदा विज्ञान विभाग, स्वामी केशवानन्द राजस्थान, कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर।

खरीफ की विभिन्न फसलों में कई प्रकार के रोगों का प्रकोप होता है जैसे ब्लाइट, धान की भूरा चित्ती, जीवाणु झुलसा रोग, तुलासिता रोग, हरित बाली, अरगर रोग आदि जिनके लक्षण व रोकथाम इस प्रकार है।

महत्वपूर्ण फसलों में रोगों के लक्षण व रोकथामः–

चावल

1. ब्लाइट रोग

लक्षणः– इसका प्रकोप सबसे पहले पत्तियों पर होता है। उसके बाद धीरे–धीरे पुष्पक्रम व दानों के छिलकों पर छोटे–छोटे नीले धब्बे के रूप में पूरे पौधों पर फैल जाता है, बाद में भूरे रंग में बदल जाता है और पौधा झुलसा हुआ दिखाई देता है।

रोकथामः–

- प्रतिरोधी प्रजातियों की बुवाई करें।
- बीज को बुवाई से पूर्व थायरम 2 ग्राम से उपचारित करना चाहिए।
- रोग के लक्षण दिखते ही कार्बेन्डाजिम 50% WP 1 किलोग्राम 700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

2. धान की भूरा चित्ती रोग

लक्षणः– इस रोग के प्रभाव से पत्तियों पर गोलाकार धब्बे बन जाते हैं पौधों की वृद्धि रूक जाती है। पैदावार कम होती है।

रोकथामः–

- फसल में नाइट्रोजन की नियंत्रण मात्रा ही डालनी चाहिए। नाइट्रोजन की अधिक मात्रा डालने पर रोग बढ़ जाता है।
- बीज को थायरम+कार्बेन्डाजिम (2:1) की 3 ग्राम मात्रा से उपचारित कर बुवाई करनी चाहिए।
- फसल पर रोग का प्रकोप दिखने पर मेंकोजेब का 0.3% का छिड़काव करना चाहिए।

3. जीवाणु झुलसा रोग

लक्षणः– इस रोग से पत्तियों के नोंक व किनारे सिकुरने लगते हैं पैदावार भी कम होती है।

रोकथाम/नियंत्रणः–

- स्टेप्टोसाइक्लिन 15 ग्राम+500 ग्राम कॉपरऑक्सीक्लोराइड मिलाकर 500–600 लीटर पानी में घोलकर फसल पर छिड़काव करें।

मक्का

मक्का को फसलों की रानी भी कहा जाता है।

1. तुलासिता रोग के लक्षणः– तुलासिता रोग को डाउनी मिल्ड्यू भी कहते हैं। डाइनी मिल्ड्यू के कारण पत्तियों पर पीली धारियाँ पड़ जाती है तथा भूट्टे नहीं आते हैं। पौधा छोटा रह जाता है। पत्तियों की नीचली सतह पर सफेद कवक की वृद्धि दिखाई देती है।

रोकथामः–

- रोग के नियंत्रण हेतु जिंक मेगनीज कार्बोनेट/थायरम 80% WP 2 किलोग्राम/हैक्टेयर के हिसाब से छिड़काव करने से रोग पर नियंत्रण किया जाता है।

बाजरा

1. हरित बाली

लक्षणः– इस रोग के लक्षण पत्तियों पर दिखाई देते हैं। रोग से ग्रसित पौधों की पत्तियाँ पीली पड़कर बाद में भूरे रंग की हो जाती है। पौधों की बढ़वार रूक जाती है। बाली पर रोग का प्रकोप होने पर बाली छोटी व मुड़ी हुई पत्तियों के आकर में बदल जाती है। रोगग्रस्त बाली में दाने नहीं बनते हैं।

रोकथामः–

- रोगरोधी किस्में NHB-67, NH-179 व WCE-75
- एग्रोन एस.डी. नाम दवा 6 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।
- खड़ी फसल में मेंकोजेब 2 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

2. अरगर रोग

इसे गूंदिया या चेंपा भी कहते हैं। बालियों में फूल आने के समय इस रोग का प्रकोप अधिक होता है। रोगग्रस्त बालियों के फूलों में से गुलाबी रंग का गाढ़ा तथा चिपचिपा द्रव निकलता है। रोगग्रस्त बालियों में दाने नहीं बनते। रोगग्रस्त बालियों में अरगोटिन नामक एक विषैला पदार्थ पाया जाता है।

रोकथामः–

- बुवाई से पूर्व बीजों को नमक के 20% घोल में उपचारित करना चाहिऐ। रोगग्रस्त दाने पानी में ऊपर तैरने लगते हैं।
- नीचे बैठे स्वस्थ दानों को साफ पानी से 2–3 बार धोकर सूखाकर बुवाई के काम में लेना चाहिए।
- सिट्टे निकलते समय मेंकोजेब 1–5 ग्राम/हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

3. कण्डुआ रोग

रोगग्रस्त बालियों में दानों के स्थान पर फफूँद के बीजाणुओं का काला चूर्ण बन जाता है। रोग के बीजाणुओं का प्रसारण एक स्थान से दूसरे स्थान पर हवा द्वारा होता है।

रोकथामः–

- गर्मी के दिनों में गहरी जुताई करनी चाहिए।
- फसल चक्र अपनायें।

भण्डारण के कारगर नुस्खे

- जिन अनाजों में नमी की अधिकता हो उसे भण्डारित न सकें, इससे अअनाज के दानों के साथ कवक के बीजाणु लगे होते हैं जो अनुकूल वातावरण मिलने पर पनपने लगते हैं। ऐसी स्थिति में 1 किलोग्राम अनाज में 2 ग्राम एसिटिक एसिड का छिड़काव करें।
- ऐसे अनाज का भण्डारण न करें जिसके दाने टूटे हो या मशीन की प्रक्रिया में कट गये हों। भण्डारण करने से पूर्व ऐसे दानों को अलग कर लें।
- यदि व्यावसायिक दृष्टिकोण से भण्डारण किया गया हो तो अनाज में हवा लगाई जाये और इसी के साथ अनाज को नीचे–ऊपर घुमाया जाये।
- दालों को भण्डारण से पूर्व संशोधित कर लें जिससे कीड़ों का आक्रमण रोका जा सके।
- विभिन्न भण्डारण संरचना में खाद्यान्न का भण्डारण किया जाता है। लेकिन अनुसंधान के आधार पर यह देखा गया है कि पूसा कोठी कम लागत से बनाई जाती है। जिसमें अंकुरण क्षमता काफी दिनों तक बनी रहती है, यह करीब–करीब पूर्णतः हवा बंद संरचना है। अंदर की दीवार मिट्टी से बनी होने के कारण तापमान को भी नियंत्रित करती है। यदि इसमें कीड़ों का आक्रमण हो भी जाये तो हवा बंद संरचना के कारण प्रधूमन से सफलतापूर्वक प्रधूमित किया जा सकता है।